आपातकाल में सृजन फुलवारी

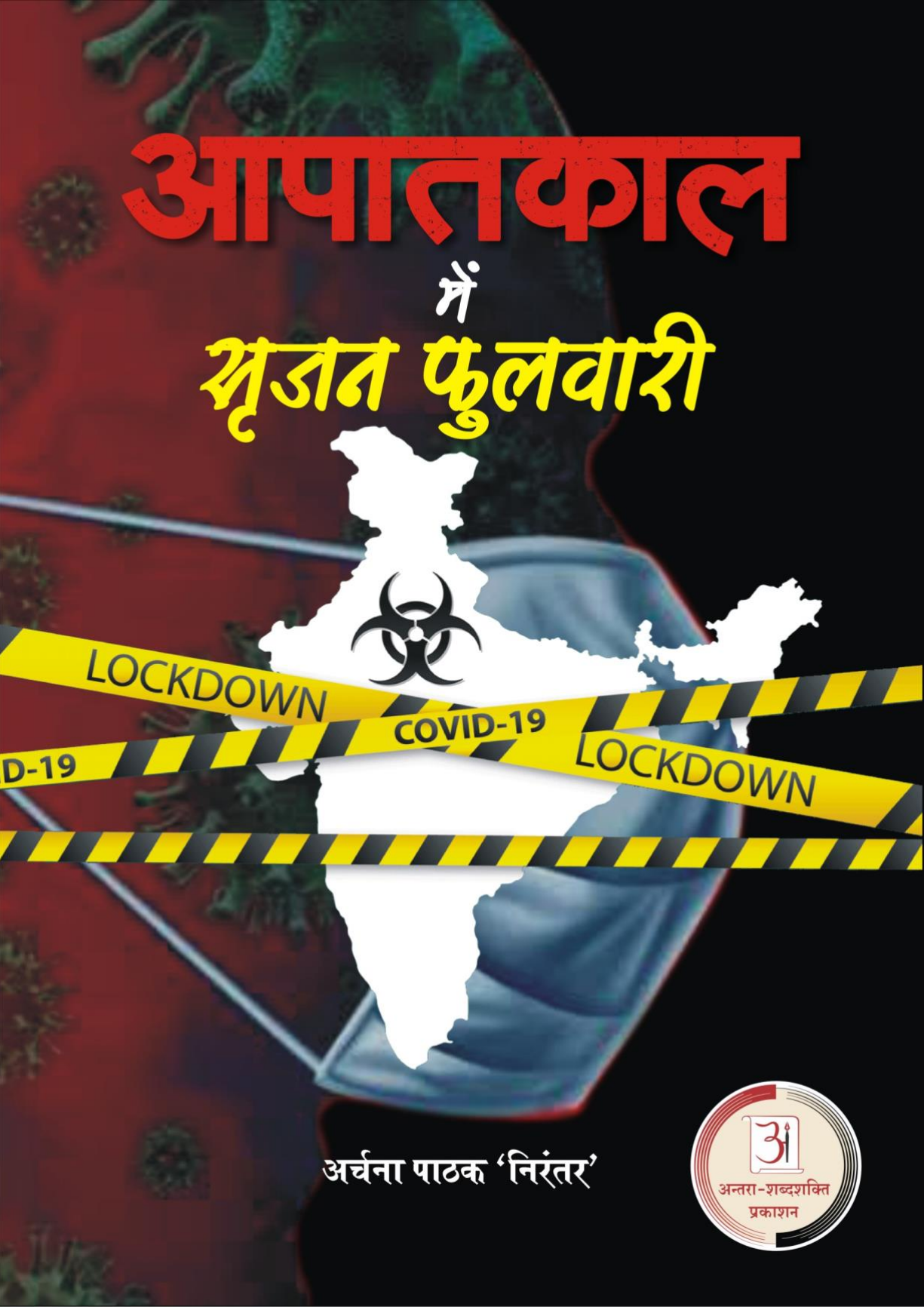

अर्चना पाठक 'निरंतर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अर्चना पाठक 'निरंतर'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-116-9
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, अर्चना पाठक 'निरंतर'
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ARCHANA PATHAK 'NIRANTAR'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	श्री राम	6
2.	राम नवमी	7
3.	पलायन	8
4.	आडम्बरहीन	9-10
5.	कल्याण करो माँ	11
6.	रात चाँदनी सी धवल	12
7.	माँ दुर्गे	13
8.	नारी शक्ति	14
9.	झाँक जरा	15
10.	प्रेम कहानी	16
11.	हम तुम	17
12.	शीशे का खिलौना	18
13.	भोलेनाथ	19
14.	बसंती पवन	20
15.	नमन शहीद जवानों को	21

श्री राम

सीता पति श्रीराम है, घट-घट करते वास।
जन्म सफल होगा तभी, सुमिरन से हैं पास।।

सुमिरन से हैं पास, आस कब वो हैं तोड़े।
स्वयं बना लो खास, रास जीवन से जोड़े।।

उर में जाएँ डूब, भक्ति का पट है रीता।
सबके प्रभु श्री राम, नाम आनंदित सीता।1।

कैसी लीला आपकी, जग में है विस्तार।
अपने घर में कैद है, बंद हुआ निस्तार।।

बंद हुआ निस्तार, गजब सन्नाटा छाया।
अंदर हाहाकार, मचा अति भय का साया।।

बैठो अपने नीड़, करो कुछ रचना ऐसी।
भा जाए प्रभु राम, कृपा मिलती है कैसी।2।

राम नवमी

अवध पुरी आए सिय रामा।
ढोल बजे नाचे सब ग्रामा।।
घर-घर दीप जले हर द्वारे।
वापस आए सबके प्यारे।1।

राम राज चहुँ दिशि है व्यापे।
लोक लाज संयत सब ताके।।
राजधर्म सिय वन प्रस्थाना।
सत्य ज्ञान किंतु नहीं माना।2।

है अंतस सदा बसी सीता।
एकांत रहे उर बिन मीता।।
सुख त्याग सर्व कर्म निभावें।
प्रजा सुखी निज दुख बिसरावें।3।

नरकासुर मारे बनवारी।
राम तो है विष्णु अवतारी।।
खील बताशे बहुत सुहाती।
सबके मन खुशियाँ भर आती।4।

लौट चुके हैं अब वनवासी।
मुदित समस्त अयोध्यावासी।।
उर आनंदित चहुँ दिशि छाये।
हरे तिमिर जगमग छवि पाये।5।

लिपे -पुते सुंदर घर द्वारे।
हैं प्रकाशित रहे उजियारे।।
नए-नए सुंदर परिधाना।
सब को मन से तुम अपनाना।6।

पलायन

झोपड़ियाँ हैं गीली-गीली, इमारतों में सिमटे लोग।
देख टपरिया का भोलापन, बढ़ता जाए मन का रोग।

बालकनी से नीचे झाँके, बेचैन कोलाहल फूटे।
द्वार खुला तो देख रहे हैं, हाँडी का हलाहल छूटे।
अंतड़ियाँ है झिल्ली-झिल्ली, अर्पण करके कैसे भोग।
झोपड़ियाँ है गीली-गीली, इमारतों में सिमटे लोग।

प्राची से उषा है पूछती, पात्र भरता गंगाजल है।
फिर भी क्षीर नीर को तरसे, कैसे कह दूँ विजय पल है।
संगिनियाँ है फैली फैली, विषाणु प्रखर भयंकर रोग।
झोपड़ियाँ है गीली-गीली, इमारतों में सिमटे लोग।

एक भयंकर सूक्ष्मजीव जो, विश्व की अकड़ तोड़ दिया।
गिन-गिन रोटी खाते तन की, रीता झोंपड़ी छोड़ दिया।
दुनिया होती नीली-नीली, पलायन से बिलखते लोग।
झोपड़ियाँ है गीली-गीली, इमारतों में सिमटे लोग।

भय से भागे आगे पीछे, मिल सभी को सहारा दे दें।
जो सड़क पे भूखे-नंगे, उनको निवाला हमारा दे दें।
नौकरियाँ हैं सीली सीली, दुबक के घर में बैठे लोग।
झोपड़ियाँ है गीली-गीली, इमारतों में सिमटे लोग।

दूर से सभी साथ रहो ना, फिर क्या कर लेगा कोरोना।
सभी हिम्मत हौसला दो ना, हारेगा इक दिन कोरोना।
थैलियाँ दिखीं पीली पीली, बाँटते सबको भले से लोग।
झोपड़ियाँ है गीली-गीली, इमारतों में सिमटे लोग।

आडम्बरहीन

भाई की व्यथा को भाई समझे नहीं तो,
उसे भाई राम का भरत सा चाहिए।

सुख सुविधाओं की बलि बेदियों के पार,
वन उपवन में संगिनी सीता सी चाहिए।

और बिना किसी कारण पुत्र का विछोह सहे,
वैसी वज्र सीने वाली माता सुमित्रा सी चाहिए।

पति का वियोग जीवन का संयोग बना,
वर्षों इंतजार करने वाली पत्नी उर्मिला सी चाहिए।

सीता की खोज में किया लंका पार,
दीन-दुखियों में आस राम सा चाहिए।

बलशाली दशानन के अहम का विनाश किया,
वैसा ही न्याय और धर्म प्रकाश चाहिए।

चाल का कलंक माथे पर लगा,
पुन: स्वाभिमानी रानी सीता सी चाहिए।

अश्व की गति को रोक राजा को ललकारे जो,
नन्हें बालकों में तेज लव-कुश सा चाहिए।

प्रजा की खातिर सुख संगिनी का त्यागे जो,
वैसा पुरुषोत्तम राजा राम सा चाहिए।

मन में भरे घृणा और मैल दूर कर,
प्रेम और भाई चारा को बढ़ाना चाहिए।

लो प्रतिज्ञा बुराई खत्म करने की,
सभी इंद्रियों पे अपना ही राज चाहिए।

बुराई बनी अब भ्रष्टाचार, नेता करें अत्याचार,
मिलावटी है सब व्यवहार, पुनः हमें वही राम राज चाहिए।

साधारण मनुष्य छवि में जन्म लिया,
दिया पुरुषार्थ ज्ञान हमको भी चाहिए।

सीधे सरल त्योहारों के रूप को बदल दिया,
दिखावटी बनी फिजूल पैसा भी चाहिए।

पटाखों के शोर से अंबर भी विदीर्ण हुआ,
हवाओं में धुँए का जहर घुलना नहीं चाहिए।

हम तो मनाएँ इसे धूमधाम रीति से,
आडंबर हीन हमको पर्व मनाना चाहिए।

त्योहारों के देश में है करते मान,
प्रेम से मनाने में ही इनकी शान चाहिए।

कल्याण करो माँ

माता के श्री चरणों में मेरी है वैतरणी
कल्याण करो माँ हे दुर्गा नौ अवतरणी।

शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी सिद्धिदात्री कुष्मांडा।
कात्यायनी कालरात्रि महागौरी चंद्रघंटा।

भूखों का निवाला हो और पारिजात की माला।
अमृत रस प्याला हो और प्राची का उजाला।

घर-घर घटस्थापना से माँ अंबे हैं हर्षित।
नौ दिन नौ रूप धरे होती माँ हैं शोभित।

नए-नए पंडाल सजे यज्ञ हवन और पूजा।
कष्ट निवारती माँ तुमसा न है कोई दूजा।

देवी का श्रृंगार करें और कन्याओं पे वार करे।
कन्या भोज करा बस एक दिन का सम्मान करें।

अब तो खत्म करो भद्रकाल धरती का।
संकट से बचा लो माँ प्रश्नचिन्ह भारी सा।

शक्ति से है संसार माँ तू ही तो शक्ति है।
तेरी भक्ति से ही तो सारे जग की मुक्ति है।

माता के श्री चरणों में मेरी है वैतरणी।
कल्याण करो माँ हे दुर्गा नौ अवतरणी।

रात चाँदनी सी धवल

रात चाँदनी सी धवल, सोने का झूलना।
झूठे सपने दिखाती, पाँव चुभे शूल ना।

दुनिया रोना छुपाती, संग पवन झूलना।
केश लहराते बिखरे, रश्मियाँ उड़ेलना।
कहती इतनी सी सरल, श्वास चले फूलना।
रात चाँदनी सी धवल, सोने का झूलना।

मुख खुद से क्यूँ है छुपा, अब तो दे मत सजा।
कुछ चंद्र उजाला पकड़, खर किरणों को लजा।
चंदा आधी सी नवल, पाँव लगे फूलना।
रात चाँदनी सी धवल, सोने का झूलना।

नीरव सहमी ही रही, साथ चंद्रमा खड़ी।
ठूँठ आहें भरती रही, पात रेशमी जड़ी।
निष्णात समझ से विरल, निष्प्राण न भूलना।
रात चाँदनी सी धवल, सोने का झूलना।

माँ दुर्गे

माता रानी के चरणों में गिरती गई।
इन हवाओं से कैसे मैं घिरती गई।

ये कदम उठते हैं तेरे द्वारे पे माँ।
तेरी गलियाँ मुझे सिर्फ भाने लगी।

जब न देखूँ तुझे दिल होता बेचैन।
तेरे मंदिर पर मैं रोज आने लगी।

क्षीण होता बदन लड़खड़ाते कदम।
तेरी रहमत से ही जोश पाने लगी।

धूल सड़कों पर उड़ता है उड़ जाने दो।
केश गजरों से अब मैं सजाने लगी।

जब से माता ने मुझको बुलाया इधर।
तेरे दर पे मैं सज धज के आने लगी।

लोग कहते हैं दूर बसेरा तेरा।
सरे राह मुझे नजर आने लगी।

तुम्हीं ही रक्षा करो हम सब की माँ
फैले विष के अणु इन हवाओं में है।

नारी शक्ति

झाँक अपने अस्तित्व में
तेरे अस्तित्व को भी मैं रचती हूँ।
खेल न मुझसे अब तू
मैं नारी हूँ मैं ही प्रकृति
अबला नहीं मैं
तुझे जैसे सब लोगों को जन्म दिया।
पहुँच चुकी गगन में कल्पना,सुनीता बन
ट्रक चलाई जहाज उड़ाया।
सैनिक बन दुश्मन का छक्का छुड़ाया।
पूजा हूँ प्रेम की प्रतिमूर्ति भी।
सौंदर्य हूँ घृणा का वीभत्स चेहरा भी।
समाज परिवार देश सेवी हूँ
युद्ध का भयंकर चिंघाड़ भी हूँ
तू नर है
मैं नारी हूँ।
दोनों ही जग निर्माता
फिर क्यों तू सबल
मैं अबला हूँ।
दोनों में अर्ध शक्ति सृजन की
मिलकर बने पूरे निर्माता।
अब यह मानना होगा
मेरी शक्ति पहचानना होगा।

झाँक जरा

चूहे बिल्ली करे तमाशे
धरा धरी करते पुरजोर।
वैमनस्य का कारण ढूँढो
झाँक जरा भीतर की ओर।

हो रही हलचल रण स्थल में
कब मिल जाये वो कहीं और।
बरसों बीते बैर पुरानी
अमराई की छईयाँ ठौर।
छोटी सी इक बात न रूठो
जाने न कभी मन का चोर।
वैमनस्य का कारण ढूँढो
झाँक जरा भीतर की ओर।

तृण कालीने पाँव सजाये
हिल हिल रज को दूर भगाये
रवि किरण को चुप है चुराके
निशि रानी है पाँव दबाये।
स्याह चादर घुप्प अंधेरा
चंद्रकिरण रूठी चहुँ ओर।
वैमनस्य का कारण ढूढो
झाँक जरा भीतर की ओर।

प्रेम कहानी

सड़कों, बागों और घाटियों में, उदास पत्ते झड़ने लगे।
मैं अकेली मन अजीब, उदास मौसम बदलने लगे।

बेचैन बाँसुरी की मुखर अभिव्यक्ति अमूर्त बिम्ब उकेरते।
मन के निर्मल आकाश में, इन्द्रधनुषी अनुपम छटा बिखेरते।

मदमस्त घटा छाई है, मधुमास आते ही खिल उठता है वन।
कोयल गाती मधुर स्वर, कहती सुनो बसंत का मद्धिम मन।

हर्ष भरा नवोत्कर्ष छाया, अब वीणा साँसों की तार छेड़ती।
वन उपवन राग स्वर तोल, फागुन में फाग होली के खेलती।

खेतों-खेतों हँसती सरसों, छेड़ रही गेहूँ की पसरी हुई बाली।
जाने किसको करे इशारे, मिलना कल परसों बजा के ताली।

लाल हुआ गुलमोहर गाल जैसे शर्माई, आया मिलन का दिन।
कली-कली मुस्कुरा रही, जीवन में कुछ भी नहीं तुम बिन।

कोई किसी को माने मणि, तो कोई किसी का मोती है।
दो दिलों के मिलन का दिन, तब खुशियाँ अपार होती हैं।

यहाँ का मौसम है प्यार का, रंग जमा रहता सदा बहार का।
अपना सपना एेसे संसार का, बातें हो खुशियों के इजहार का।

अपने सपनों के गुलशन में, कोई पिंजरा कोई जाल नहीं।
कड़वी सच्ची अनुभूतियों में, काँटा चुभने का मलाल नहीं।

बुलबुल बाग के विराने में रमी है, बहारों में जाने क्या कमी है।
हर कली आँखों की चुराती नमी है, कई परत काजल जमी है।

इस फागुन में फूलों की बात होगी, रंग खुशबू सौगात होगी।
मंगलमय भोर सुनहरे दिन होंगे, तारों भरी गीतों से रात होगी।

बस चहुँ ओर यहाँ, अवनी अंबर तक खुशियों की बारात होगी।
हम और तुम हों न हों, हमारी प्रेम कहानी की सदा बात होगी।

हम तुम

प्रेम आवाहन कर रहा प्रिय सजन इस बार।
क्या चलोगे साथ मेरे उस गगन के पार।

मिल गये अन्जान हम दो चल रहें हैं साथ।
अनजानी राहों पे अब थाम मेरा हाथ।

बस न छूटे संग तेरा चढ़ रहा जो प्यार।
क्या चलोगे संग मेरे उस गगन के पार।

निकल बंधनों से आगे गढ़ नया संसार।
आ पुकारे बावला मन न करना इंकार।

बादलों के पंख लेके चल उड़ें इक बार।
क्या चलोगे संग मेरे उस गगन के पार।

सूनी पलक आस तेरे सुन सजन इक बार।
ताक रही शाम सवेरे है मुझे इंतजार।

तोड़ सके न कोई इसे जुड़ गया जो तार।
क्या चलोगे संग मेरे उस गगन के पार।

प्रेम आवाहन कर रहा
प्रिय सजन इस बार।

शीशे का खिलौना

शीशे का खिलौना हूँ, गिर के टूट जाता हूँ।
दिल पे लगी जो पत्थर, चूर-चूर होता हूँ।

देखी बिकी मोहब्बत, दिल फेंक अदाएँ भी।
करती रही है दावा, कसमें दे वफाएँ भी।

फूलों का बिछौना हूँ, काँटे भी चुभाता हूँ।
शीशे का खिलौना हूँ, गिर के टूट जाता हूँ।

यादों में उभरती है, भूली हुई तस्वीरें।
कब से इसे है ढूँढे, खोई हुई तकदीरें।

गीतों का तराना हूँ, टूटी तान गाता हूँ।
शीशे का खिलौना हूँ, गिर के टूट जाता हूँ।

दिल में छुपी है मेरी, खामोश सी साँसें भी।
कैसे छवि दिखे तेरी, दुनिया की निगाहें भी।

सुनके जहां के ताने, चुपके से सिसकता हूँ।
शीशे का खिलौना हूँ, गिर के टूट जाता हूँ।

नभ का है रंग नीला, आधा चाँद दिखता है।
कहने को कहाँ दिन में, कभी चाँद निकलता है।

सांझ सुनहरी देख के, प्रेम गीत सुनाता हूँ।
शीशे का खिलौना हूँ, गिर के टूट जाता हूँ।

भोलेनाथ

प्रथम दिवस सावन आया है।
भोलेनाथ जग समाया है।।

हे परम देव हे त्रिपुरारी।
हे नीलकंठ हे शशि धारी॥

डम डम डम डम डमरू बाजे ।
त्रिनेत्र जटा जान्हवी साजे ।।

हे भोले शंकर भंडारी।
विघ्न विनाशक पालन हारी।।

पापी संहारक अविनाशी।
सार्थक जीवन जायें काशी।।

ब्रह्म स्वर डमरु में समाया।
तांडव कर ब्रह्मांड हिलाया।।

शिव अश्रु जल से रुद्राक्ष बने।
पी गरल वे नीलकंठ बने।।

त्रिलोकेश योग बीज बोए।
धतूरा बेल पत्र में खोए।।

हे अनंत हे अनघ भक्ति दो।
हे श्रीकंठ गिरीश शक्ति दो।।

बसंती पवन

बसंती पवन पिया से मिल आई।
मिलन की लगन जिया में लहराई।
दूर जहाँ बसेरा हो, बयार पर न पहरा हो।
तेज पवन पुरवइया ने तन की खुश्की बढ़ाई, बसंती पवन पिया से मिल आई।

बड़ी बावली बड़ी मस्त मौला।
बहुत घूमी गाँव, नगर और मोहल्ला।
अब चली इठलाती बलखाती इतराये।
नदी खेत पोखर बहुत याद आई, उसकी लहरों ने भी मुँह चिढ़ाई।

खेतों के होंठ फट से गए।
लाली चुनर टेसू के फूलों से भर गए।
नव कोंपलों ने आलिंगन हैं छोड़े।
वन में कोयल कूक की मधुराई, दिल में हर दम हूक जगाई।

महुए की चिपचिपाहट से,
भरी गोद पलाश के फूलों से।
एक मदमाती खुशबू ने,
धरती की बदन महकाई, स्वप्निल चेहरे से खरोंच भरने आई।

एहसास लंबी विरहजालों से,
पुष्पों की रक्तिम गालों से।
तितलियों के स्वछंद विचरण ने,
अब छेड़ी तान की मधुराई, कुसुम ने भी आँचल सरकाई।

रस अनुरागी तरूण तितली से,
और बंद कली की खुशबू से।
सुवास पिया के आने की,
खिल-खिल बगिया भी मुस्काई, बसंती पवन पिया से मिल आई।

नमन शहीद जवानों को

भड़क उठी चिंगारी क्रोध की
भारतीयों के भीतर आग जल रही।

बेकसूर वीरों के कत्ल की
आक्रोश भरी ज्वाला भड़क रही।

बयालीस वीर मारे, कई चोटिल की
आत्मघाती खेल से आत्मा तड़प रही।

देखो दुस्साहस शत्रु के मनोबल की
चढ़े बलिवेदी पर, कर्तव्य खटक रही।

ऐसी दुर्दशा वीरों के बिखरे लाशों की
उन्हें खतरों की कतई भनक न रही।

सहेंगे कब तक मार जुल्मों की
प्रहार कर पूछें अब बताओ कैसी रही।

पूरी दुनिया एक रहे, वहशी रहे अकेला
बहिष्कार करे मिलकर खत्म हो सब खेला।

हिन्दुस्तान अब और सहेगा नहीं।
आततायियों के खौफ से डरेगा नहीं।

चाहे जितना भी दम भर लें कोई।
वीरों की अंतरात्मा नहीं है सोई।

घर बार छोड़ सीमा पर तैनात रहे।
एेसे जांबाजों की मौत पर दुनियाँ रोई।

नमन उन वीर शहीद की विधवाओं को ।
जो शहादत के लिए पुन: भेजे स्वपुत्रों को।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आज पूरा विश्व भयंकर समस्या से ग्रस्त है जहाँ प्रतिदिन हर व्यक्ति भय के साए में जीवन व्यतीत कर रहा है, सारे बाहर के कार्य स्थगित कर घर में चुपचाप बैठने को मजबूर है। रोज की भाग दौड़ भरी जिंदगी से कुछ दिनों की मुक्ति मिली है। न कार्य पर जाने की हड़बड़ी है न बाहरी अन्य कार्य करने हैं। तब मन में विचार आया कि यह सुनहरे पल जो फुर्सत के लिए हैं क्यों न उन पलों में कुछ सृजन कार्य किया जाए उससे जहाँ एक ओर भय से मुक्ति मिलेगी वहीं कुछ साहित्य सेवा भी हो जाएगी। लिखते समय कुण्डलियाँ, चौपाई जैसे छंद विधान पर भी लिखा और कुछ नवगीत और गीत भी सृजित किया, छंद मुक्त रचनाएँ भी लिखी हैं। आज हम जिस भय से गुजर रहे हैं लोग परेशान हो रहे हैं इस विषय पर नवगीत लिखा। नवरात्रि भी इसी बीच आई माँ दुर्गा की स्तुति में दो रचनाएँ रची इसमें संकट मुक्त करने की माँ से प्रार्थना की है। राम नवमी के अवसर पर श्री राम जी की चौपाई लिखी। कुछ प्रेम रस से परिपूरित श्रृंगारिक कविताएँ भी रच डाली वहीं देश सेवा में निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे वीर सेनानियों व शहीदों पर कुछ पंक्तियाँ सृजित की। बसंती पवन सदा से लुभाती है उसे भी रचना के विषय के रूप में चुना। भगवान शिव शंभू जो पापी संहारक हैं नीलकंठ त्रिलोकेश जी की स्तुति में कुछ पंक्तियाँ रच डाली है। कभी दिल में लगी चोट को बयां करती रचना का पुट भी है जो 'शीशे का खिलौना' शीर्षक से परिलक्षित होता है। तो कभी सड़कों बागों में पतझड़ के उदास मौसम का भी वर्णन है। आपसी वैमनस्य को दूर करने के लिए 'झाँक जरा' शीर्षक से व्यंजनात्मक शैली में नवगीत सृजन किया है। एक ओर जहाँ नारी शक्ति को सशक्त लेखनी से मान देने का प्रयास किया है वहीं 'आडंबरहीन' शीर्षक में कुछ पौराणिक उदाहरण देते हुए विशुद्ध आचरण का आह्वान किया है।

आशा है ये पंद्रह रचनाएँ पसंद आएँगी।

धन्यवाद।

रचनाकार

अर्चना पाठक 'निरंतर'

अंबिकापुर

सरगुजा, छत्तीसगढ़

E mail- 9424257421archana @gmail.com

Mobile - 9424257421

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-116-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/